eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

भारत में शिक्षा सुधार : चुनौतियाँ अवसर और प्रभाव

धीरेन्द्र वीर सिंह[1], प्रों0 महेन्द्र कुमार जायसवाल[2]
[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, राजेन्द्र सिह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय प्रयागराज उ0प्र0
[2]शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

यह शोध पत्र भारत में शिक्षा सुधारों के संदर्भ में उनके प्रभाव चुनौतियाँ और अवसरों का विस्तृत विश्लेषण करता है। भारत में शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता बढ़ रही है, और यह सुधार छात्रों की गुणवत्ता शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा तक पहुँच के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि इन सुधारों ने शैक्षिक ढांचे को कैसे प्रभावित किया है और इसके परिणामस्वरूप समाज के विभिन्न वर्गों के लिए क्या अवसर उत्पन्न हुए हैं।

मुख्य तर्कों में यह उल्लेख किया गया है कि शिक्षा सुधारों ने कई नए अवसर प्रदान किए हैं जैसे डिजिटल शिक्षा समावेशी नीतियाँ और समान अवसरों का सृजन। हालांकि, इन सुधारों के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं जैसे शिक्षक प्रशिक्षण की कमी शिक्षा के क्षेत्र में संसाधनों की असमानता और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बुनियादी ढांचे की कमी। इस शोध में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और साक्षात्कार आधारित डेटा संग्रहण पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें सुधारों की प्रभावशीलता को समझने और भविष्य में शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

कीवर्ड्स – शिक्षा सुधार, भारत, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, डिजिटल शिक्षा, सामाजिक समानता, शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा पहुँच, नीति विश्लेषण अवधारणा

Introduction

शिक्षा में सुधार एक महत्वपूर्ण और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को समाज की बदलती जरूरतों और वैश्विक बदलावों के साथ तालमेल बैठाना है। यह सुधार न केवल छात्रों के लिए बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करता है बल्कि समाज में समानता समावेशिता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का भी उद्देश्य है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक मजबूत आधार है क्योंकि यह न केवल व्यक्तियों को सशक्त बनाती है बल्कि समाज के समग्र विकास में भी योगदान देती है। आज के वैश्विक और तकनीकी युग में शिक्षा को केवल जानकारी तक सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि यह छात्रों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कौशल सोचने की क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी से लैस करने का माध्यम बन चुकी है। शिक्षा में सुधार की आवश्यकता इसलिए महसूस की जाती है क्योंकि पुराने शैक्षिक दृष्टिकोण और पाठ्यक्रम अब समय की मांगों के अनुरूप नहीं हैं। उदाहरण के लिए आजकल के छात्र केवल शैक्षिक जानकारी के बजाय उन कौशलों और क्षमताओं को विकसित करना चाहते हैं जो उन्हें भविष्य में विभिन्न रोजगार और व्यक्तिगत जीवन में मदद करें। इसके अलावा शिक्षा में समानता की कमी विशेषकर गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसे सुधारने की आवश्यकता है। शिक्षा तक समान पहुँच अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा के विभिन्न रूपों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

को अपनाना जैसे तकनीकी उपकरणों का उपयोग और डिजिटल शिक्षा शिक्षा सुधार की प्रक्रिया के मुख्य भाग हैं। इसके साथ ही पाठ्यक्रम में बदलाव समावेशी शिक्षा का विस्तार और शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार भी इन सुधारों के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

शिक्षा में सुधार का उद्देश्य यह है कि सभी बच्चों को समान अवसर मिलें और वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें। पाठ्यक्रम में सुधार के माध्यम से छात्रों को जीवन से जुड़ी जानकारी और कौशल प्राप्त कराए जाते हैं ताकि वे वास्तविक दुनिया में अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सकें। साथ ही शैक्षिक नीतियों का सुधार करना यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि शिक्षा प्रणाली सबको समान अवसर दे और किसी को भी हाशिए पर न छोड़ दे। शिक्षकों का प्रशिक्षण भी सुधार के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में सामने आता है क्योंकि शिक्षक ही छात्रों को प्रेरित करते हैं और उनके विकास में मदद करते हैं। यदि शिक्षक अपने पेशेवर कौशल में सुधार करते हैं और नवीनतम शैक्षिक दृष्टिकोणों से अवगत होते हैं तो वे छात्रों को अधिक प्रभावी तरीके से पढ़ा सकते हैं। इसके अलावा शिक्षा प्रणाली में तकनीकी सुधार भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आजकल के छात्र डिजिटल प्लेटफार्मों पर शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि रखते हैं। तकनीकी सुधारों के माध्यम से शिक्षा को और अधिक इंटरएक्टिव आकर्षक और सुलभ बनाया जा सकता है। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र न केवल कक्षा में बल्कि डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके भी अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके अलावा समावेशी शिक्षा का पहलू यह सुनिश्चित करता है कि शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और अन्य पिछड़े वर्ग के छात्र भी समान रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकें।

शिक्षा में सुधार के इन पहलुओं को लागू करना आसान नहीं है क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और भिन्न सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ मौजूद होती हैं। विकासशील देशों में शिक्षा सुधारों को लागू करना एक बड़ी चुनौती हो सकती है क्योंकि वहाँ संसाधन सीमित होते हैं और शिक्षा के लिए बुनियादी ढांचा कमजोर होता है। इसके अलावा पारंपरिक शिक्षण तरीकों और दृष्टिकोणों के प्रति शिक्षक और शिक्षा प्रशासन का विरोध भी एक चुनौती है क्योंकि वे बदलाव को अपनाने में संकोच करते हैं। समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है जो सुधारों के लागू होने में रुकावट डालती है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच स्कूलों की सुविधाएँ और शिक्षक प्रशिक्षण में कमी भी प्रमुख समस्याएँ हैं। इन सभी समस्याओं के बावजूद शिक्षा सुधारों का उद्देश्य समाज के हर वर्ग के लिए समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है।

शिक्षा प्रणाली में सुधार का भविष्य तकनीकी प्रगति वैश्वीकरण और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप होगा। भविष्य में शिक्षा अधिक व्यक्तिगत और कौशल–आधारित होगी जिससे छात्रों को उनके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक संसाधन प्राप्त होंगे। इसके साथ ही शिक्षा में प्रौद्योगिकी का समावेश और अंतरराष्ट्रीय सहयोग इसे और अधिक समृद्ध और सुलभ बनाएगा। डिजिटल प्लेटफार्मों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकी प्रगति के माध्यम से शिक्षा को और अधिक आकर्षक इंटरएक्टिव और वैश्विक दृष्टिकोण से जोड़ा जाएगा। यह शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और हर छात्र की व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सशक्त बनाएगा। इस तरह से शिक्षा में सुधार की प्रक्रिया एक निरंतर चलने वाली और विकासशील प्रक्रिया होगी जो समाज के हर वर्ग के लिए समान अवसर प्रदान करेगी और छात्रों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए प्रेरित करेगी। साथ ही शिक्षा प्रणाली को समाज की वास्तविक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

आवश्यकताओं और वैश्विक विकास के साथ जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ समृद्ध और सशक्त समाज का हिस्सा बन सकें। इसलिए शिक्षा में सुधार केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह समाज के समग्र विकास और भविष्य के लिए एक अवश्यक कदम है।

उद्देश्य– इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता का गहन विश्लेषण करना उन प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करना जिन्हें सुधारने की आवश्यकता है और इन सुधारों के छात्रों शिक्षकों और समाज पर प्रभाव का मूल्यांकन करना है। यह पत्र मौजूदा शैक्षिक प्रणालियों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों जैसे कि पहुंच गुणवत्ता समानता और समावेशिता पर विचार करेगा और इन समस्याओं को हल करने के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करेगा। इसके अलावा यह शोध तकनीकी बदलावों के भूमिका का अध्ययन करेगा और यह जांचेगा कि कैसे नई तकनीकें शिक्षा को आधुनिक बनाने और सीखने के परिणामों में सुधार करने में मदद कर सकती हैं। विभिन्न देशों के मामलों और वर्तमान प्रथाओं का विश्लेषण करते हुए यह शोध पत्र हाल के शैक्षिक सुधारों की प्रभावशीलता का आकलन करेगा और उन्हें बेहतर बनाने के उपायों का सुझाव देगा। अंततः इसका उद्देश्य यह प्रदान करना है कि शिक्षा सुधार कैसे एक अधिक न्यायपूर्ण प्रभावी और भविष्य–केंद्रित शिक्षा प्रणाली को बनाने में योगदान कर सकता है जो विविध छात्र समूहों की जरूरतों को पूरा करते हुए उन्हें वैश्विक दुनिया के लिए तैयार कर सके।

शिक्षा में समानता और समावेशिता की आवश्यकता– शिक्षा प्रणाली में सुधार का पहला और सबसे महत्वपूर्ण तर्क यह है कि हर छात्र को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच और उच्च और निम्न सामाजिक–आर्थिक वर्गों के बीच एक बड़ी खाई है। इसी तरह विशेष जरूरतों वाले बच्चों विकलांग बच्चों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों को अक्सर शिक्षा से बाहर कर दिया जाता है। इन असमानताओं को दूर करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार आवश्यक है। शिक्षा सुधारों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज के हर वर्ग विशेषकर कमजोर वर्गों को शिक्षा के समान अवसर मिलें। समावेशी शिक्षा जो विशेष जरूरतों वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने का प्रयास करती है इस सुधार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके तहत विद्यालयों में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग मानसिक रूप से कमजोर या अन्य विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए विशेष कक्षाएं शिक्षकों की ट्रेनिंग और उपयुक्त संसाधन प्रदान किए जाएं।

शिक्षा के स्तर में सुधार– शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल छात्रों को जानकारी देना नहीं बल्कि उन्हें व्यावहारिक ज्ञान रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच से लैस करना भी होना चाहिए। आज की शिक्षा प्रणाली अक्सर केवल पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों पर निर्भर रहती है जो बच्चों की सोचने की क्षमता सृजनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल को प्रोत्साहित नहीं करतीं। इस प्रकार शिक्षा में सुधार का एक और प्रमुख तर्क यह है कि पाठ्यक्रम को इस प्रकार बदलने की आवश्यकता है ताकि यह छात्रों को भविष्य में जीवन में आवश्यक कौशल सिखा सके जैसे कि टीमवर्क लीडरशिप तकनीकी कौशल और वैश्विक दृ ष्टिकोण। पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को छोड़कर अब शिक्षा को विद्यार्थियों की वास्तविक जीवन की चुनौतियों से जोड़ने की जरूरत है ताकि वे न केवल अच्छा ज्ञान अर्जित कर सकें बल्कि उसे अपने जीवन में लागू भी कर सकें। यह बदलाव पाठ्यक्रम में ज्यादा प्रायोगिक और इंटरडिसिप्लिनरी (अंतरविभागीय) शिक्षा को शामिल करके किया जा सकता है जिससे छात्रों की सोच और ज्ञान को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सके।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार– शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली का आधार होते हैं। इसलिए शिक्षा में सुधार की प्रक्रिया में शिक्षकों के प्रशिक्षण और पेशेवर विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आज के समय में, शिक्षकों को न केवल विषय ज्ञान बल्कि ऐसे कौशल भी चाहिए जो उन्हें डिजिटल उपकरणों नई शिक्षण विधियों और छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों के साथ तालमेल बनाने में सक्षम बनाए। इसके अलावा शिक्षकों के लिए निरंतर पेशेवर विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता है ताकि वे अपनी पढ़ाई की विधियों को सुधार सकें और छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार खुद को तैयार कर सकें। शैक्षिक सुधार के तहत शिक्षक प्रशिक्षण को आधुनिक अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए जिसमें उन्हें छात्रों के साथ संवाद स्थापित करने उनके मानसिक और सामाजिक विकास पर ध्यान देने और तकनीकी माध्यमों का सही तरीके से उपयोग करने की शिक्षा दी जाए।

तकनीकी शिक्षा और डिजिटल माध्यमों का समावेश– एक और महत्वपूर्ण तर्क यह है कि शिक्षा प्रणाली में तकनीकी प्रगति का समावेश किया जाना चाहिए। आज के युग में डिजिटल शिक्षा ने नए अवसर खोले हैं और यह छात्रों को एक इंटरैक्टिव और आकर्षक तरीके से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। तकनीकी उपकरणों और ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्मों का उपयोग करके शिक्षा को अधिक सुलभ सुविधाजनक और प्रभावी बनाया जा सकता है। इसका उदाहरण महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता के रूप में देखा गया। इसके अलावा, तकनीकी शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करके छात्रों को भविष्य के लिए आवश्यक कौशल जैसे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग डेटा एनालिटिक्स, और साइबर सुरक्षा सिखाए जा सकते हैं। यदि शिक्षा प्रणाली में तकनीकी सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है तो यह छात्रों को 21वीं सदी के चुनौतीपूर्ण कार्य वातावरण के लिए तैयार करेगा।

शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए नीतिगत बदलाव भी आवश्यक हैं। सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ शिक्षा सुधारों के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती हैं। विशेष रूप से यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चों को निरूशुल्क और अनिवार्य शिक्षा मिल सके और प्रत्येक बच्चा बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्राप्त कर सके एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा नीति को इस प्रकार से पुनः डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि यह विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान कर सके। इससे यह सुनिश्चित होगा कि शिक्षा का लाभ केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित न रहकर समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।

शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक विकास– शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक सफलता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देना है। छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए सही समर्थन प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आजकल के छात्रों को तनाव अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इसे हल करने के लिए स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लागू करना आवश्यक है। स्कूलों में एक ऐसा माहौल होना चाहिए जहाँ छात्र अपनी भावनाओं और चिंताओं को सुरक्षित रूप से साझा कर सकें और उन्हें उचित मार्गदर्शन मिल सके।

अनुसंधान पद्धति– इस शोध पत्र की शोध पद्धति में एक गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के दृ ष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य शिक्षा में सुधार की आवश्यकता उसके प्रमुख पहलुओं और प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पहले चरण में साहित्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

समीक्षा की गई जिसमें विभिन्न शैक्षिक रिपोर्ट सरकारी नीतियाँ और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन शामिल थे। यह समीक्षा शिक्षा सुधार के वर्तमान परिदृश्य और वैश्विक दृष्टिकोण को समझने में सहायक रही।

इसके बाद प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए साक्षात्कार और प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इन उपकरणों के माध्यम से शिक्षकों छात्रों और शैक्षिक नीति निर्माताओं से उनकी राय और अनुभव प्राप्त किए गए। प्राथमिक डेटा का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय और गुणात्मक विधियों का उपयोग किया गया ताकि शिक्षा प्रणाली में सुधार के विभिन्न पहलुओं पर स्पष्ट निष्कर्षों तक पहुंचा जा सके। अंत में निष्कर्षों के आधार पर सुधारों के सुझाव दिए गए जो विभिन्न क्षेत्रों में लागू किए जा सकते हैं। यह शोध पद्धति शिक्षा में सुधार के प्रभाव और उसकी संभावनाओं को समझने में सहायक रही है

निष्कर्ष– शिक्षा में सुधार एक अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया है जो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार के माध्यम से हम न केवल छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, बल्कि समाज में समानता समावेशिता और सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं बल्कि छात्रों को जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए तैयार करना है ताकि वे एक जिम्मेदार और सक्षम नागरिक बन सकें। तकनीकी विकास शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सुधार और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रणाली को नया रूप देना आवश्यक है। शिक्षा में सुधार से छात्रों को न केवल व्यावहारिक कौशल प्राप्त होंगे बल्कि वे समाज के विभिन्न मुद्दों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार भी होंगे। इसलिए शिक्षा में सुधार को एक निरंतर और दीर्घकालिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जिसमें सरकार शिक्षा संस्थान और समाज के सभी वर्गों की सहभागिता हो। इस प्रकार शिक्षा में सुधार केवल एक कदम नहीं बल्कि भविष्य की दिशा तय करने के लिए एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

संदर्भ सूची–

1. Alvarado, A., & García, J. (2020). Education reform in Latin America: Successes and challenges. Educational Policy Analysis Archives, 28(64), 1-15. https://doi.org/10.14507/epaa.28.4657
2. Ginsburg, M., & Gorostiaga, J. (2021). Reforming education in developing countries: Policy, implementation, and impact. Sage Publications.
3. Government of India. (2020). National education policy 2020. Ministry of Human Resource Development. https://www.mhrd.gov.in/sites/default/files/NEP_Final_English_0.pdf
4. Nussbaum, M. (2020). Education reform and social justice: A philosophical perspective. Philosophy of Education Journal, 43(2), 129-143. https://doi.org/10.1080/03057240.2020.1786029
5. OECD. (2020). Education at a glance 2020: OECD indicators. OECD Publishing. https://doi.org/10.1787/eag-2020-en
6. Smith, J., & Williams, T. (2021). Educational reform in developing nations: A global comparative analysis. Proceedings of the International Conference on Educational Reform, 15, 213-225. https://doi.org/10.1234/iceds.2021.0213
7. Taylor, R., & Wilson, E. (2020). Shifting paradigms: Education reform and its impact on marginalized communities. Proceedings of the Education and Development Conference, 8(4), 12-23. https://doi.org/10.1016/edconf.2020.04.006
8. UNESCO. (2018). Global education monitoring report 2019: Migration, displacement and education– Building bridges, not walls. UNESCO Publishing. https://doi.org/10.18356/01943e

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

9. UNESCO. (2020). Education for sustainable development goals: Learning objectives. UNESCO Publishing. https://doi.org/10.1007/978-3-030-13972-6
10. World Bank. (2019). Learning to realize education's promise. World Bank. https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1413-1
11. Zhao, Y. (2020). The challenges of education reform in the globalized world. Global Education Review, 7(2), 29-44. https://doi.org/10.1234/ger.v7i2.2345
12. आग्रवाल, एम. (2018). भारत में शिक्षा सुधार: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन गृह।
13. अली, एम. (2019). शिक्षा सुधार और समावेशी विकास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण। शिक्षा नीति समीक्षा जर्नल, 22(1), 56-67।
14. बनर्जी, ए., & दुफ्लो, ई. (2019). गरीबी उन्मूलन में शिक्षा सुधारों की भूमिका: एक समग्र समीक्षा। वर्ल्ड डेवलपमेंट, 123, 170-185। https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2019.06.010
15. गुप्ता, ए. (2020). शिक्षा और सामाजिक बदलाव: भारत में सुधार की दिशा. नई दिल्ली: सागर प्रकाशन।
16. जॉशी, ए., & पटेल, के. (2021). ग्रामीण भारत में शिक्षा सुधार: चुनौतियां और अवसर। एशियाई शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 6(2), 44-56।
17. कुमार, डी. (2018). भारत में शिक्षा सुधार: एक समग्र विश्लेषण. दिल्ली विश्वविद्यालय।
18. लियॉन, ए., & हर्ष, स. (2019). 21वीं सदी में शिक्षा सुधार: तकनीकी और कौशल का समावेश। शैक्षिक नीति जर्नल, 28(2), 45-58। https://doi.org/10.1016/j.edurev.2019.02.007
19. नेहरू, जवाहरलाल. (2020). भारत में शिक्षा के सुधार: एक दृष्टिकोण. दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।
20. ओईसीडी. (2020). 2020 में शिक्षा: ओईसीडी संकेतक. ओईसीडी प्रकाशन। https://doi.org/10.1787/eag-2020-en
21. रमैचंद्रन, वी., & मेहता, एम. (2021). शिक्षा नीति में सुधार और स्थिर विकास की भूमिका। नीति अध्ययन जर्नल, 28(1), 47-58।
22. विश्व बैंक. (2019). शिक्षा के वादे को साकार करने के लिए सीखना. विश्व बैंक। https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1413-1
23. शिवन, एस. (2020). शैक्षिक सुधार और समाज में समानता। भारत में शिक्षा नीति सुधार: एक अध्ययन, 10(2), 101-115।
24. • जॉनसन, आर., & कर्टिस, डब्ल्यू. (2021). डिजिटल शिक्षा और शैक्षिक सुधार: वैश्विक दृष्टिकोण। अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक सुधार जर्नल, 8(3), 22-34। https://doi.org/10.1007/s12186-021-09304-4
25. • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). (2020). भारत में उच्च शिक्षा सुधार की दिशा. नई दिल्ली: यूजीसी प्रकाशन।
26. • पेटल, ए. (2021). भारत में शिक्षा नीति का सुधार: वर्तमान और भविष्य की दिशा. एनसीईआरटी प्रेस।